रात्रि क्लास 6-11-'68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

"गोप-गोपियों की लोड ही लख लहे,।" बच्चों को खुशी इतनी होनी चाहिए। बेहद का बाप पढ़ाते हैं। और बच्चे समझते हैं बहुत बार शरीर छोड़कर आत्माने नया2 शरीर लिया है। ऐसे करते2 शरीर ही पुराना हो गया है। तमोप्रधान और सतोप्रधान होते ही रहते हैं। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने लिये ही यह संगम युग है। अभी कहेंगे कनिष्ठ। बच्चों को अभी समझ आई है बाप को याद करने से हमारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी। यह तो पुरुषार्थ करना ही है। गीता के अक्षर भी है मन्मनाभव। अलफ माना बाबा। वे बादशाही। तो अभी यह याद करना है। स्वर्ग में तो जाते हो ना। स्वर्गवासी तो बनते हो ना। कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। स्वर्ग कहा जाता है नई दुनिया को। स्वर्ग को सभी इतना याद करते हैं जो कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। गोया पहले नर्क में था सो स्वर्ग में गया। तो सिध होता है ना नर्क में है। तुम बच्चों के लियेसर्विस बहुत है। अखबार में पढ़ता है तोसमझाना पड़े। बिगर कोई मेहनत स्वर्गवासी थोड़ेही होंगे। आगे समझते नहीं थे। अब समझते आये हो। तुम जानते हो हम बराबर स्वर्गवासी बनते हैं। माया घड़ी2 भूला देती है। फिर याद करना पड़े। बाबा को तीनों रूप में याद करने सेखुशी का पारा चढ़ा रहना चाहिए। बाबा आया हुआ है। जरूर लेकर ही जावेंगे। पुरानी दुनिया को खलास होना ही है। शास्त्रों में सभी है अज्ञान। भक्ति से मनुष्यों को कितना धोखा मिलता है। शास्त्रों के आधार पर कितना ठहरे हुये होते हैं! अभी तुम समझते हो हम भक्ति करते थे तो गिरते थे। बाप मिला है तो चढ़ने का मार्ग मिला है। नई दुनिया को सतयुग कहा जाता है। अभी तो आयरनएजेड तमोप्रधान कहा जाता है। पुरानी दुनिया के बाद फिर नई दुनिया आवेगी। अभी बुधि से पुरानी दुनिया का सन्यास किया जाता है। पुराना घर खलास होना है उन से क्या दिल लगाना है। अभी बच्चों को खुशी भी होनी चाहिए भगवान हमको पढ़ाते हैं। कानफ्रेन्स जो हुई थी कलकत्ते में बाबा ने कहा था लेख लिखकर आओ विश्व में शान्ति पर। परन्तु कोई ने लिखानहीं। तुम खुद विश्व में शान्ति स्थापन कर रहे हो। वहां जाये पूछ सकते हैं शान्ति कैसी चाहिए। नई दुनिया में जरूर विश्व में शान्ति होगी। वह नई दुनिया गाड फादर ही स्थापन करते हैं। अशान्ति की दुनिया रावण बनाती है। नई दुनिया के कैरेक्टर्स और पुरानी दुनिया के कैरेक्टर्स में कितना फर्क है। इतनी सहज बात भी कहां समझ नहीं सकते। बाबा जानते हैं देरी है। तो वह जोहर भरता ही नहीं। नई दुनिया सतयुग में देवताओं का राज्य था। अभी तो है रावण सम्प्रदाय। विकारी सम्प्रदाय है ना। बाप समझाते हैं मुझे याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। प्युरिटी बिगर कोई शान्तिधाम जा नहीं सकते। बाबा ही कल्प2 आकर रास्ता बताते हैं। बाप आते भी हैं संगम पर। किसको भी समझाना बहुत सहज है। तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सर्विस बिल्कुल ठीक कर रहे हो। नम्बरवार फर्स्ट क्लास, सेकण्ड थर्ड क्लास तो है ही। पढ़ाने वाली ब्राह्मणी भी फर्स्ट सेकण्ड थर्ड है। तो पढ़ने वाले भी ऐसे नम्बरवार हैं। सतयुग को स्वर्ग कहा जाता है। अभी बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम मालिक बन जावेंगे। कितना सहज है। फिर भी घड़ी2 क्योंभुल पड़ते हैं। हराते हैं। माया भी कम थोड़ेहीहैं। समझाना भी तुम बच्चों को है। बाप नहीं जावेंगे। बाप बच्चों को ही पढ़ाते हैंबाकी को बच्चों द्वारा समझना है। न समझना है तो चले जाओ। बात ही सीधी। समझा जाता है फर्स्ट क्लास अच्छी सर्विस करते हैं। स्टुडन्ट को समझना चाहिए। सभी टीचर्स एक जैसे थोड़े ही होंगे। नम्बरवार जरूर होंगे। बाप कोई तकलीफ की बात नहीं कहते हैं। मुंझने की बात ही नहीं। इसको कहा जाता है सहज समझानो। योग बिगर समझ क्या सकेंगे। बाप टीचर है तो जरूर उनको याद करना पड़े। कितना सहज है। जास्ती क्या समझाना है। परन्तु नये2 आते हैं तो समझाना पड़ता है। बाप तो कहते हैंदो अक्षर ही काफी है। मुंझते क्यों हो समझ में ही नहीं आता है। अभी तुम बच्चों को समझ है शान्तिधाम सुखधाम को याद करना है। अथवा बाप को याद करना है। सुखधाम को याद करना है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

?-:: विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है ?::-:

24